2

मत्ती की पुस्तक

मसीह, राजा

मत्ती की पुस्तक सुसमाचार के वृत्तांतों और नये नियम की सबसे पहली पुस्तक है। व्यावहारिक तौर पर नये नियम की सब किताबों से पहली पुस्तक यही है। इसे पहला स्थान इसलिए दिया गया हो सकता है क्योंकि, प्राचीन (बाइबल से बाहर की) परम्परा के अनुसार यह पुस्तक मसीह के जीवन के नये नियम के तीन अन्य वृत्तांतों में से सबसे पहले लिखी गई थी। इसके पहली पुस्तक होने का एक और सम्भावित कारण यह है कि यह चारों वृत्तांतों में सबसे प्रसिद्ध थी, क्योंकि दूसरी–और तीसरी–शताब्दी के मसीही लेखक मरकुस, लूका या यूहन्ना के बजाय मत्ती से ही उद्धृत करते थे।

मत्ती की पुस्तक के पहली होने का कारण कोई भी हो, परन्तु इस पुस्तक की स्थिति और ज़ोर पुराने नियम और नये नियम के बीच जोड़ने वाली सम्पूर्ण कड़ी बन जाती है। पुराना नियम यहूदियों द्वारा अपने चिर प्रतीक्षित राजा और मसीहा की राह देखते हुए खत्म होता है। नया नियम मत्ती की पुस्तक की इस घोषणा से आरम्भ होता है कि वह राजा *यीशु* है!

मत्ती की पुस्तक का परिचय

पुस्तक का लेखक

मत्ती की पुस्तक (या ''मत्ती के अनुसार'') सम्भवतया मूल पुस्तक का भाग नहीं था।[1] तब भी प्रारम्भिक लेखकों का एक मत से मानना था कि जिस पुस्तक को आज मत्ती का नाम मिला है, वह उसी ने ही लिखी थी।[2] पुस्तक की प्रकृति इस बात से सहमत है कि मत्ती के शान्ति के बारे में बहुत कम जानकारी है।[3]

मत्ती, जिसके नाम का अर्थ ''परमेश्वर का उपहार'' है, लेवी के रूप में भी प्रसिद्ध था, जिसका अर्थ ''शांति में मिला'' है। (मत्ती 9:9 की मरकुस 2:14 से तुलना करें।)[4] वह कफ़रनहूम का रहने वाला था (मरकुस 2:1, 14), जो गलील की झील के उत्तर पश्चिमी तट पर स्थित एक बड़ा नगर था, और उसके पिता का नाम हलफई था (मरकुस 2:14)। मत्ती रोमी सरकार के लिए कर इकट्ठा करने का काम करता था[5] (मत्ती 10:3)। उसे अधिकतर यहूदी एक देशद्रोही ही मानते होंगे। उनकी नज़र में ''महसूल लेने वाला'' और ''पापी'' एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द थे (देखें मत्ती 9:10, 11; 11:19)।

एक दिन यीशु ने मत्ती को कफ़रनहूम में चुंगी लेने के लिए बैठे देखा और कहा, ''मेरे पीछे हो ले।'' यह सुनकर यह चुंगी लेने वाला ''सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया'' (लूका 5:27, 28)। अपने बुलाए जाने के थोड़ी देर बाद ही, मत्ती ने यीशु के लिए एक प्रीतिभोज दिया और चुंगी लेने वाले अपने साथियों और समाज से निकाले हुए दूसरे लोगों को निमन्त्रित किया (मत्ती 9:9-17; लूका 5:29-39)।

मत्ती का नाम बारह प्रेरितों की सब सूचियों में मिलता है (मत्ती 10:3; मरकुस 3:18; लूका 6:15; प्रेरितों 1:13)। वह उस काम में भी भागीदार होगा, जो प्रेरितों ने यरूशलेम में प्रेरितों के काम 1 से 7 अध्याय में किया था, परन्तु हमारे पास उसके बाद उसकी सेवकाई के सम्बन्ध में कोई विश्वसनीय जानकारी नहीं है। बाइबल से बाहर की प्रारम्भिक परम्परा के अनुसार उसने 15 या इससे अधिक वर्षों तक यहूदिया में प्रचार किया और फिर दूर के इलाके में चला गया। इसी परम्परा के अनुसार उसने ''अपनी उपस्थिति की कमी, लिखकर'' पूरी की।[6]

पुस्तक के बारे में एक प्रश्न

बहुत से प्रारम्भिक लेखकों का सुझाव था कि मत्ती ने पहले यह पुस्तक पहली शताब्दी की अरामी भाषा में लिखी थी और बाद में इसका मत्ती द्वारा या किसी अन्य द्वारा यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया। मेरिल टैनी ने लिखा है कि यह परम्परा ''अक्सर नकारी जाती रही है, क्योंकि इसके अरामी मूल का होने का कोई संकेत नहीं है और सुसमाचार की भाषा में यूनानी अनुवाद होने का कोई चिह्न नहीं है।''[7] जैक लूईस का कहना है कि ''अधिकतर विद्वान'' ज़ोर देते हैं ''कि हमारी पुस्तक यूनानी भाषा में लिखी यूनानी पुस्तक है'' और कहा, ''प्रारम्भिक अरामी सुसमाचार के न तो उद्धरण और न ही हस्तलिपियां बची हैं।''[8] मत्ती की पुस्तक के अपने अध्ययन में हम अरामी भाषा के प्रारम्भिक परिकल्पित संस्करण पर ध्यान नहीं देंगे, बल्कि हम पुस्तक पर (यूनानी में लिखी गई) ध्यान लगाएंगे, जो परमेश्वर ने हमारे लिए सम्भालकर रखी है।

पुस्तक का उद्देश्य

पुस्तक लिखते समय स्पष्टतया मत्ती के मन में अपने साथी यहूदी ही रहे होंगे। इसीलिए उसने यहूदी वंशावली से आरम्भ किया (1:1-17)। उसने अपनी पुस्तक में पुराने नियम के सौ के लगभग संकेत शामिल किए, जिनमें से चालीस से अधिक सीधे हवाले हैं।[9] उसने यह ज़ोर देना जारी रखा कि यीशु ने पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा किया है (देखें 1:23; 2:6, 15, 23)। उसने ''दाऊद की संतान'' जैसे यहूदियों में परिचित शब्दों का इस्तेमाल किया (1:1, 20; 9:27)। उसने ज़ोर दिया कि यीशु को ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों'' के पास भेजा गया था (15:24; 10:6 भी देखें)।

मत्ती का उद्देश्य यह दिखाना था कि इस्राएल का चिर-प्रतीक्षित मसीहा/राजा आ चुका है। पुस्तक का विषय आरम्भ की आयत में ही घोषित कर दिया गया: ''इब्राहीम की

संतान, दाऊद की संतान, यीशु मसीह की वंशावली'' (1:1)।

> यह कथन मसीह को उन दो बड़ी वाचाओं के साथ जोड़ता है, जो परमेश्वर ने दाऊद और अब्राहम से बांधी थीं। दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में एक राजा के उसके सिंहासन पर बैठने की प्रतिज्ञा थी (2 शमूएल 7:8-13)। अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में यह प्रतिज्ञा थी कि उसके वंश के द्वारा पृथ्वी के सब घराने आशीष पाएंगे (उत्पत्ति 12:3)।[10]

''मसीहा'' या मसायाह इब्रानी शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ ''अभिषिक्त'' है। इसका समानार्थक यूनानी शब्द ''ख्रिस्तुस'' है (यूहन्ना 1:41)। याजकों और दूसरे लोगों की नियुक्ति में अभिषेक किया जाता था (निर्गमन 28:41; 29:7);[11] परन्तु जब कोई यहूदी ''परमेश्वर का अभिषिक्त'' शब्द सुनता था तो उसका ध्यान *राजा* पर ही जाता था (देखें 1 शमूएल 10:1; 24:6; ज़.सं. 2:2, 6)। मत्ती के वृत्तांत में यीशु के *राजा होने* पर ज़ोर है: ज्योतिषी (पण्डित लोग) ''यहूदियों के राजा'' को दण्डवत करने आए थे (2:2)। हेरोदेस को लगा कि यीशु कोई विद्रोही राजा होगा (2:3-9)। लोगों ने माना कि वह दाऊद की संतान है था (9:27; 15:22; 20:30)। यीशु राजा के रूप में यरूशलेम में आया (21:1-11; देखें आयत 5) उसके क्रूस पर लिखा गया था ''यहूदियों का राजा'' (27:37)। यीशु ने शपथ खाई कि एक दिन वह न्यायी के रूप में उस सिंहासन पर अवश्य बैठेगा (25:31-33)।

ऐरिक हेयडन का सुझाव है कि मत्ती की पुस्तक में ''हमारा परिचय राजा के दूत (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले[12]), परीक्षा के समय (उसकी परीक्षाओं), राजा के घोषणा पत्र (पहाड़ी उपदेश), राजा की सेवकाई (उसकी शिक्षाएं तथा आश्चर्यकर्म), राजा का ठुकराया जाना, मृत्यु तथा पुनरुत्थान से कराया गया है।''[13] *लुक ऐट द बुक* नामक पुस्तक के लेखकों ने लिखा है, ''यीशु एक राजा पैदा हुआ, राजा बनकर रहा, राजा की तरह बोलता था, राजा की तरह मरा, मुर्दों में से जी उठकर उसने राजाओं के राजा के रूप में फिर से आने की प्रतिज्ञा की।''[14]

मत्ती ने राजा के *राज्य* पर भी ध्यान केन्द्रित किया है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मूल संदेश और यीशु के चेलों का संदेश यही था कि ''स्वर्ग का राज्य निकट है'' (मत्ती 3:2; 4:17; 10:7)। मत्ती की पुस्तक में ''राज्य'' शब्द पचास से अधिक बार आता है।[15] (''स्वर्ग का राज्य'' ही तीस से अधिक बार आता है।[16]) पुस्तक के कई दृष्टांतों का आरम्भ ''स्वर्ग का राज्य ... के जैसा है'' से होता है (अध्याय 13 में दृष्टांत देखें)।

मत्ती की पुस्तक यहूदी पाठकों के लिए लिखी गई हो सकती है, परन्तु *केवल* यहूदियों के लिए ही नहीं। परमेश्वर की प्रेरणा पाए इस प्रेरित ने पुस्तक सब लोगों के लिए लिखी। उसके वृत्तांत की पहली आयत में ही न केवल यह कहा गया कि यीशु ''दाऊद की संतान'' था, बल्कि यह भी कहा गया कि वह ''अब्राहम की संतान'' था। यीशु अब्राहम के साथ की गई प्रतिज्ञा का पूरा होना था कि उसके द्वारा पृथ्वी की *सब* जातियां आशीष

पाएंगी (उत्पत्ति 12:3; 22:18; गलतियों 3:8)। मत्ती ने गैर यहूदियों (अन्यजातियों) के हवाले बार-बार दिए हैं (4:14-16; 8:11, 12; 12:18, 21; 13:38; 15:22-28; 24:14)। पुस्तक के आरम्भ में ही अन्यजातियों के प्रतिष्ठित लोग यीशु को प्रणाम करने आए थे (2:2-12); इसके अन्त में, यीशु ने आज्ञा दी, ''इसलिए तुम जाकर *सब* जातियों के लोगों को चेला बनाओ'' (मत्ती 28:19क)। मत्ती की पुस्तक यीशु को पूरे संसार के उद्धारकर्ता के रूप में दिखाती है।

पुस्तक की विशेषताएं

मत्ती की पुस्तक की अधिकतर विशेषताओं का सम्बन्ध इसके उद्देश्य से है।

जैसे कि पहले भी बताया गया है, सुसमाचार का यह वृत्तांत *पूरी हुई भविष्यवाणी* पर ज़ोर देता है। बार-बार, इसमें यह बताया गया है कि यह इसलिए हुआ ''कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता [या भविष्यवक्ताओं] द्वारा कहा था; वह पूरा हो'' (देखें मत्ती 1:22; 2:15, 17, 23; 8:17)। मत्ती ने इस तथ्य का विशेष बिन्दु बनाया कि क्रूस पर चढ़ाया जाना (यहूदियों के लिए ठोकर का पत्थर, 1 कुरिन्थियों 1:23) भविष्यवाणी का पूरा होने के लिए है (26:54, 56; 27:9)। इस प्रकार यह पुस्तक स्पष्ट कर देती है कि ''मसीहियत धर्मान्ध लोगों का 'नया' धर्म नहीं [था], बल्कि भविष्यवक्ताओं की सब भविष्यवाणियों का पूरा होना [था]।''[17]

जैसे यह भी ध्यान दिया गया है, पुस्तक की *मजबूत यहूदी पृष्ठभूमि* है। पुराने नियम तथा इस्राएल के मसीहा/राजा पर ज़ोर देने के अलावा यह मत्ती के समय अलग-अलग यहूदी विचारों, भक्ति के इसके बाहरी कार्यों, पहचान के इसके प्रेम और यहूदी विश्वास छोड़ने की गतिविधियों पर प्रकाश डालती है।[18]

यीशु के राजा होने पर मत्ती के ज़ोर देने के कारण उसके वृत्तांत की कुछ सामग्री अन्य तीन पुस्तकों में नहीं मिलती। उसके द्वारा लिखित 15 दृष्टांतों में से, 11 उसी ने लिखे हैं। उसकी पुस्तक में बताए गए तीन आश्चर्यकर्म और कहीं नहीं मिलते। कुल मिलाकर तीस प्रतिशत के लगभग भाग मत्ती की पुस्तक से सम्बन्धित हैं और उनमें से अधिकतर का विषय राजा और उसका राज्य है।

पुस्तक में *यीशु की शिक्षा* पर काफी ज़ोर दिया गया है। यदि यीशु राजा है, तो उसे नियम बनाने का अधिकार भी है। मत्ती ने मसीह के पांच महान उपदेश दर्ज किए हैं,[19] जिसमें अद्वितीय पहाड़ी उपदेश भी शामिल है (5-7)।

मत्ती द्वारा लिखित यीशु की शिक्षा का विलक्षण पहलू देखने की बात है: सुसमाचार के चार वृत्तांतों में केवल इसी वृत्तांत में ''कलीसिया'' शब्द का उल्लेख है (16:18; 18:17)। यहूदी लोग यहोवा की सभा या मण्डली के विचार से परिचित थे (निर्गमन 12:3, 6, 19, 47)।[20] इसके अलावा ''सिनागॉग'' या आराधनालय यूनानी शब्द का अर्थ एकलेसिया से, जिसका अनुवाद ''चर्च'' या कलीसिया है मिलता-जुलता था।[21] मत्ती ने कहा कि मसीहा के राज्य की भविष्यवाणियां मसीह की कलीसिया में पूरी होंगी।

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि पुस्तक में *अपोलोजेटिक तत्व* विलक्षण है। मसीह के जन्म के वृज़ांत का एक कारण यहूदियों में फैली अफवाहें हो सकता है कि यीशु का जन्म अवैध था। 28:11-15 पर ध्यान दें, जहां मज़ी ने खाली कब्र की प्रसिद्ध यहूदी व्याज़्या का भंडाफोड़ किया। मज़ी ने वास्तव में तथ्य देकर अपने पाठकों को यह निर्णय लेने की चुनौती दी कि वे किस ओर हैं: विश्वास की ओर हैं या अविश्वास की।

सुसमाचार के अन्य वृज़ांतों की तरह, मज़ी की पुस्तक में यीशु की मृत्यु को हमारे पापों के लिए बताया गया है। पुस्तक का 25 प्रतिशत के लगभग भाग मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने तथा पुनरुथान पर केन्द्रित है।

पुस्तक लिखे जाने का समय

मज़ी द्वारा ''आज तक'' वाज़्यांश का इस्तेमाल (27:8; 28:15) संकेत देता है कि उसके द्वारा लिखी गई घटनाओं के बाद काफी समय की बात है। दूसरी ओर, पुस्तक निश्चित रूप से यरूशलेम के विनाश से पहले लिखी गई थी (70 ईस्वी), जिसकी भविष्यवाणी अध्याय 24 में स्पष्ट की गई है। पुस्तक सज़्भवतया 50 और 70 ईस्वी के बीच लिखी गई थी। अधिकांश रूढ़िवादी लेखक इसका समय 60 ईस्वी के लगभग बताते हैं।

पुस्तक के विभाजन

मज़ी की पुस्तक में कई स्वाभाविक विभाजन हैं। 4:17 और 16:21 में ''उस समय से'' शज़्दों से जीवनी सज़्बन्धी विभाजन मिलते हैं। अध्याय 4 का पद 17 यीशु की सेवकाई का आरज़्भ है, जबकि 16:21 समाप्ति का आरज़्भ। उसके महान उपदेशों के अन्त में मिलने वाले ''जब यीशु ये बातें कह चुका'' शज़्दों से विषयात्मक विभाजनों के साथ चिह्नित किया गया है (7:28; 11:1; 13:53; 19:1; 26:1)।

इन स्वाभाविक विभाजनों के बिन्दुओं को मिलाकर एक व्यापक रूपरेखा बनाना चुनौतीपूर्ण कार्य है। बहुत सी रूपरेखाओं में ''मसीहा'' या ''राजा'' में से एक शज़्द का इस्तेमाल किया जाता है। टैनी ने अपने विभाजनों में ''मसीहा'' शज़्द का इस्तेमाल किया है: (1) मसीहा की भविष्यवाणियां पूरी हुईं, (2) मसीहा के सिद्धान्तों की घोषणा हुई और (3) मसीहा की सामर्थ प्रकट हुई।[22] मियर्स ने ''राजा'' और ''राज्य'' शज़्दों का इस्तेमाल किया है: (1) राजा का आना, (2) राज्य का प्रचार, (3) राजा का ठुकराया जाना और (4) राजा की विजय।[23] जॉन फिलिप्स ने भी अपने शीर्षकों में ''राजा''[24] का इस्तेमाल किया है। नीचे दी गई रूपरेखा को उसी के मुज़्य विभाजनों से लिया गया है।

मत्ती की पुस्तक की एक रूपरेखा

I. राजा प्रकट हुआ (1:1-9:38)।

क. यीशु की सेवकाई की तैयारी।

1. यीशु की वंशावली (1:1-17)।
2. यीशु का जन्म और शैशवकाल (1:18-2:23)।
   - क. ज्योतिषियों का आना।
   - ख. मिस्र में जाना।
   - ग. बच्चों का कत्ल।
   - घ. नासरत में लौटना।
3. यीशु का बपतिस्मा (3:1-17)।
   - क. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (मसीहा के दूत) का काम।
   - ख. उस काम का चरम: यीशु का बपतिस्मा।
4. यीशु की परीक्षा (4:1-11)।

ख. यीशु की सेवकाई की सामर्थ।

1. गलील में उसकी सेवकाई का प्रारम्भ (4:12-17; 4:23-25; 9:35-38 में उस सेवकाई को संक्षिप्त कथन देखें)।
2. उसके पहले चेले (4:18-22)।
3. पहाड़ी उपदेश (5:1-7:29)।
4. सामर्थपूर्ण आश्चर्यकर्म (और प्रसिद्धि का बढ़ना; देखें 8:1)-और इधर-उधर बिखरी घटनाएं।
   - क. एक कोढ़ी का चंगा होना (8:2-4)।
   - ख. एक सूबेदार के सेवक का चंगा होना (8:5-13)।
   - ग. पतरस की सास और अन्य लोगों का चंगा होना (8:14-17)।
   - घ. होने-वाले चेले (8:18-22)।
   - ङ. लहरों को शांत करना (8:23-27)।
   - च. दुष्टात्माओं से पीड़ित दो मनुष्यों का चंगा होना (8:28-34)।
   - छ. झोले के मारे हुए आदमी का चंगा होना (9:1-8)।
   - ज. मत्ती की बुलाहट और मत्ती की दावत (9:9-13)।
   - झ. उपवास सम्बन्धी एक प्रश्न (9:14-17)।
   - ञ. एक बीमार स्त्री चंगी हुई और मरी हुई लड़की जिलाई गई (9:18-26)।
   - ट. दो अन्धों को चंगाई मिली (9:27-31)।
   - ठ. दुष्टात्मा से ग्रस्त एक आदमी चंगा हुआ-और एक आरोप कि यह चंगाई दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से हुई थी (9:32-34)।

II. राजा का विरोध हुआ (10:1-16:12)।

क. विरोध का पूर्वाभास था।

1. बारह चेलों को सामाजिक सेवा के लिए ठहराया गया (10:1-4)।
2. सीमित आज्ञा ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना''- जिसमें चेले होने के लिए सामान्य निर्देश भी थे (10:5-42)। (विरोध के पूर्वाभास के रूप में, देखें आयतें 14, 16-18, 21-25, 28, 34-36, 39।)

ख. विश्वास और वफ़ादारी की प्रशंसा (इस समय के दौरान यीशु की सेवकाई पर एक सामान्य कथन के लिए, देखें 11:1)।

1. यूहन्ना का प्रश्न-और यीशु का उज़र (11:2-19)।
2. यीशु की उन लोगों के लिए डांट, जिन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया और ग्रहण करने वालों के लिए उसकी प्रशंसा (11:20-27)। (28-30 आयतों में बड़ी बुलाहट पर ध्यान दें।)

ग. विरोध बढ़ा। (इस समय के दौरान उसकी सेवकाई पर सामान्य कथनों के लिए, देखें 14:34-36 और 15:29-31.)

1. सज़्त के सज़्बन्ध में आलोचना (12:1-13)।
2. उसकी हत्या करने का षड्यन्त्र (12:14)।
3. सामने से बचने की कोशिश (12:15-21)।
4. यह आरोप दोहराया गया कि उसने दुष्टात्माओं के सरदार की शज़्ति से चंगाई दी (12:22-37)।
5. उसे एक चिह्न दिखाने की चुनौती (12:38-45)।
6. परमेश्वर के प्रति समर्पण यीशु के साथ सज़्बन्ध की कुंजी (12:46-50)।
7. राज्य की वास्तविक प्रकृति पर दृष्टांत (13:1-52)।
8. नासरत में यीशु ठुकराया गया (13:53-58)।
9. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु (14:1-12)।
10. पांच हज़ार को खिलाना (14:13-21)।
11. पतरस के विश्वास का डगमगाना (14:22-33)।
12. गन्नेसरत में चंगाई (14:34-36)।
13. हाथ धोने के सज़्बन्ध में आलोचना (15:1-20)।
14. कनानी स्त्री की बेटी को चंगाई मिली, तथा अन्य चंगाइयां (15:21-31)।
15. चार हज़ार लोगों को खिलाना (15:32-39)।
16. यीशु को फिर चिह्न दिखाने की चुनौती दी गई (16:1-4)।
17. फरीसियों और सदूकियों के प्रभाव के सज़्बन्ध में चेतावनी (16:5-12)।

III. राजा ठुकराया गया (16:13-27:66)।

क. यीशु की मृत्यु की जानकारी पहले ही दी गई।

1. अच्छा अंगीकार-और अपनी मृत्यु की यीशु की भविष्यवाणी (16:13-28)।
2. रूपांतरण-और यीशु की मृत्यु की भविष्यवाणी (17:1-13)।
3. दुष्टात्मा से ग्रस्त एक लड़के की चंगाई-और यीशु की आने वाली मृत्यु पर और (17:14-23)।

ख. आवश्यक निर्देशों का पूर्वानुमान।

1. कर देने के बारे में एक प्रश्न (और मछली के मुंह में सिक्के का आश्चर्यकर्म) (17:24-27)।
2. बच्चों और दीनता पर निर्देश (18:1-14; 19:13-15 भी देखें)।
3. सम्बन्धों पर निर्देश (18:15-20)।
4. क्षमा पर निर्देश (18:21-35)।
5. तलाक के विषय में प्रश्न (19:1-12)।

ग. यरूशलेम निकट आ गया (देखें 19:1, 2)।

1. जवान धनी हाकिम और यीशु के पीछे आने का प्रतिफल (19:16-30)।
2. दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टांत-और यीशु की मृत्यु की एक और भविष्यवाणी (20:1-19)।
3. सेवक बनने की आवश्यकता-और दूसरों के लिए मरने की यीशु की इच्छा (20:20-28)।
4. यरीहो में दो अन्धों को चंगाई दी गई (20:29-34)।

घ. अन्तिम सप्ताह आरम्भ हो गया।

1. विजयी प्रवेश तथा मन्दिर को शुद्ध करना, बाद में यीशु के शत्रुओं की आलोचना (21:1-17)।
2. अंजीर के पेड़ को श्राप देना (21:18-22)।
3. प्रश्नों का दिन (मंगलवार):
   क. यीशु के कामों के अधिकार से जुड़े प्रश्न (21:23-27)।
   ख. दृष्टांत, जिनसे महायाजकों और फरीसियों पर ज़ोर लगता था (21:28-22:14)।
   ग. कैसर को कर देने सम्बन्धी प्रश्न (22:15-22)।
   घ. पुनरुत्थान सम्बन्धी प्रश्न (22:23-33)।
   ङ. ग्रेट कमिशन सम्बन्धी प्रश्न (22:34-40)।
   च. एक प्रश्न से यीशु के शत्रु चुप हो गए (22:41-46)।
   छ. शास्त्रियों और फरीसियों (और यरूशलेम) पर हाय कही गई (23:1-39)।

ज. यरूशलेम के विनाश तथा द्वितीय आगमन पर शिक्षा।

(1) एक अपोज़्लिपटिक (भविष्यसूचक) संदेश (24:1-51)।

(2) दस कुंवारियों का दृष्टांत (25:1-13)।

(3) तोड़ों का दृष्टांत (25:14-30)।

(4) द्वितीय आगमन तथा न्याय पर शिक्षा (25:31-46)।

ङ. अन्त शीघ्र।

1. यीशु की मृत्यु से सज़्बन्धित एक और भविष्यवाणी (26:1, 2)।
2. यीशु की हत्या का षड्यन्त्र तीव्र होता है (26:3-5)।
3. बैतनिय्याह में (उसकी मृत्यु के पूर्वाभास में) यीशु का अभिषेक (26:6-13)।
4. यीशु के शत्रुओं के साथ षड्यंत्र (26:14-16)।

च. फसह का पर्व मनाया गया।

1. फसह के पर्व की तैयारी (26:17-20)।
2. यहूदा के विश्वासघात की भविष्यवाणी (26:21-25)।
3. प्रभु-भोज की स्थापना (26:26-29)।
4. चेलों के तितर-बितर जाने की भविष्यवाणी-और पतरस का इनकार (26:30-35)।
5. गतसमनी के बाग में (26:36-46)।
6. यीशु का पकड़वाया जाना और गिरज़्तारी (26:47-56)।

छ. यीशु के मुकदमे।

1. कैफ़ा के सामने (और पतरस का इनकार) (26:57-75)।
2. पिलातुस के सामने (और यहूदा की आत्महत्या) (27:1-26)।

ज. यीशु की मृत्यु तथा गाड़े जाने का विवरण।

1. यीशु की पिटाई और गुलगुता में ले जाना (27:27-32)।
2. यीशु का क्रूसारोहण तथा मृत्यु (27:33-54)।
3. यीशु का गाड़ा जाना-और कब्र की ''सुरक्षा'' (27:55-66)।

IV. राजा जी उठा (28:1-20)!

क. स्त्रियों में पुनरुथान की घोषणा और यीशु का दर्शन (28:1-10)।

ख. खाली कब्र की झूठी ''कहानी'' (28:11-15)।

ग. यीशु का चेलों को दिखाई देना-और ग्रेट कमीशन (28:16-20)।[25]

टिप्पणियां

[1]परन्तु ऐसा कोई सकारात्मक प्रमाण नहीं है कि पुस्तक बिना इस शीर्षक के कभी वितरित की गई हो। [2]यूसबियुस *एज़्लेसिएस्टिकल हिस्टरी* 3.34.16; इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 3.1.1. [3]मज़ी एक यहूदी था; जो कर के कार्यालय में काम करता था (मज़ी 9:9), वह रिपोर्टें लिखने का काम करता होगा। [4]कुछ लोगों का विचार है कि बचपन का उसका नाम लेवी था और यीशु ने उसका नाम ''मज़ी'' रखा था, बिल्कुल वैसे ही जैसे शमौन का ''पतरस।'' [5]KJV तथा हिन्दी संस्करणों में कर इकट्ठा करने वाले को ''महसूल लेने वाला'' कहा गया है। [6]यूसबियुस *एज़्लेसिएस्टिकल हिस्टरी* 4.24.6. [7]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1961), 142. [8]जैक पी. लूइस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथियू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैन्ट्री सीरीज़, सं. एवरेट फर्ग्यूसन (ऑस्टिन, टैज़्सस: स्वीट पज़्लिशिंग कं., 1976), 9. [9]पुराने नियम के हवालों की सही-सही संज़्या अलग-अलग लेखक द्वारा अलग-अलग दी गई है, परन्तु सब इस बात पर सहमत हैं कि मज़ी में पुराने नियम के *बहुत, बहुत* हवाले हैं। [10]हेनरिटा सी. मियर्स, *व्हट द बाइबल इज़ ऑल अबाउट* (ग्लेनडेल, कैलिफोर्निया: गॉस्पल लाइट पज़्लिकेशन्स, 1966), 355.

[11]1 राजा 19:16 से संकेत मिल सकता है कि भविष्यवज़्ताओं का अभिषेक किया जाता था। [12]अधिकतर अनुवादों में इस यूहन्ना को ''the Baptist'' अर्थात ''बपतिस्मा देने वाला'' कहा गया है। आज ''बैपटिस्ट'' के बाइबल के समयों से अधिक अलग-अलग अर्थ हैं। ''बैपटिस्ट'' यूनानी शज़्द का लिप्यान्तरण है, जिसका मूल अर्थ ''जो बपतिस्मा देता है।'' विलियम एफ़. बैक, *द न्यू टैस्टामेंट इन द लैंगुएज ऑफ़ टुडे* की तरह अंग्रेज़ी के द रिवाइज्ड स्टैण्डर्ड वर्ज़न तथा द न्यू रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड वर्ज़न में इस शज़्द का अनुवाद ''बैपटाइज़र'' अर्थात बपतिस्मा देने वाले के रूप में किया गया है। जे. बी. रॉदरहम, *द इज़्फेसाइज़्ड न्यू टैस्टामेंट: ए न्यू ट्रांसलेशन* में इसका अनुवाद ''इमर्सर'' अर्थात डुबकी देने वाला किया गया है। इस शृंखला में मैं यूहन्ना को ''बपतिस्मा देने वाला'' के रूप में ही लिखूंगा। [13]एरिक डज़्ल्यू. हेडन, *प्रीचिंग थ्रू द बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौर्न्डवन पज़्लिशिंग हाउस, 1964), 180. [14]ग्लैन ग्रे एण्ड टिम वुडरूफ, *लुक ऐट द बुक* (लिंकन, नेब्रासका: लिंकन चर्च ऑफ क्राइस्ट, 1988), 169. [15]कुछ लेखक मज़ी की पुस्तक में मसीह के राज्य के एक सौ के लगभग हवाले देखते हैं। [16]सुसमाचार के वृज़ांत का मज़ी अकेला लेखक था, जिसने ''स्वर्ग का राज्य'' शज़्द का इस्तेमाल किया। [17]ग्रे एण्ड वुडरूफ, 169. [18]अपने अध्ययन में हम इन पर चर्चा करेंगे। हम यहूदियों पर मज़ी के ज़ोर देने के नकारात्मक पहलुओं को भी देख सकते हैं। यीशु प्रतिज़्ा किया हुआ राजा था, परन्तु वह वैसा राजा नहीं था, जिसकी कल्पना यहूदियों ने की थी, जिस कारण उन्होंने उसे ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप, मज़ी ने नये नियम में पाई जाने वाली यहूदियों के विरुद्ध सबसे कठोर बातें लिखीं (देखें मज़ी 23)। [19]पांच महान उपदेश इन अध्यायों में मिलते हैं: (1) 5-7; (2) 10; (3) 13; (4) 18; (5) 24; 25. [20]आप कंकॉर्डैंस (अर्थात अनुक्रमणिका जो मुज़्यता अंग्रेज़ी में उपलज़्ध है) में ''congregation'' अर्थात ''मण्डली'' शज़्द देख सकते हैं।

[21]''सिनागोग'' या आराधनालय यूनानी मिश्रित शज़्द का लिप्यांतरण है, जिसका अर्थ ''मिलकर अगुआई करना'' है, जबकि *एकलेसिया* का अर्थ ''बुलाए हुए'' है (हिन्दी बाइबल में इसका अनुवाद सभा भी हुआ है)। [22]टैनी, 145. [23]मियर्स, 358-69. [24]जॉन फिलिप्स, *एज़्सप्लोरिंग द स्क्रिप्चर्स* (लंदन: विज़्ट्री प्रैस, 1965), 194-95. [25]सामग्री के ढंग के कारण मैंने मज़ी, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों के पाठों का ''सारांश'' नहीं दिया है। हर बार रूपरेखा दे देने के बाद, आप संक्षेप में पुस्तक की समीक्षा करके अगले पाठ के विषय की घोषणा कर सकते हैं।